सं० ग्रों वि० भिवानी/103-86/32881.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि परिवहन ग्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, 2 हरियाणा राज्य परिवहन, जींद, के श्रमिक श्री जगदीश राय, पुत्र श्री बारू राम जाट, गांव व डा० भड़ताना, तहसील सफीदों, जीन्द तथा उसके प्रयन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है।

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यभाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं।

इस लिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिषितियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रीव्यूचना सं. 9641-1-श्रम 78/32573,, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रीव्यूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम व्यायालय रोह्तवः को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिग्ट वारते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से ससंगत अथवा सम्बन्धित मामला है।

क्या श्री जगदीश राय की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो वि/एफ.डी./गुड़गांव/91-86/32889.—चूकि हरियाणा के राज्य पाल की रायहै कि मैं. के जे. ग्राटो प्रा. लि., धारूहेड़ा, जिला महेन्द्रगढ़, के श्रमिक श्री उदय राम, पुन्न श्री काणी राम, गांव जाटूसाना ढाणी, पोस्ट ग्राफिस जाटूसाना, तहसील रिवाड़ी, जिला महेन्द्रगढ़ तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके वाद लिखित मामले में कोई ग्रीडोगिक विवाद है।

ग्रौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं --

इस लिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई श्रीक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यवाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415—3—श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495—जी—श्रम 57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरोदाबाद को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है।

क्या श्री उदय राम की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 18 सितम्बर, 1986

सं० ग्रो०वि०/एफ०डी०/141-86/34614.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० हनुमान वूलन मिल, 11/7, मथुरा रोड, फरीदावाद, के श्रमिक श्री कृपाल सिंह रतन, पुत्र श्री ग्रात्मा सिंह, मकान नं 658, वार्ड में 1, गोपी कलोनी, पुराना फरीदावाद तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है:

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना शंछनीय समझते है;

इसलिए, घब, घौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी घिष्मूचना सं. 5415-3-धम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ परते हुये प्रधिसूचना सं. 11495-जी-धम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के घिष्मी गठित श्रम न्यायालय, करीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिणय एवं पंचाट तीन माल में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त पदन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

वया श्री कृपःल सिंह की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैं∹हाजिर होकर नौकरी से पूर्वश्रहणाधिकार (लियन) खोय≀ है ? इस बिन्दू पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो वि । एफ जी । पूड्यां व / 77-86 | 34621. -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं जपायुक्त, गुड़गांव 2. प्रशासक भगरपालिका, पि. रोजपुर झिरका (गुड़गांव), के श्रमिक श्री गुल्यान कुमार, पृत्न श्री भजन लाल, मकान नं . 352, वार्ड नं . 11, मोहल्ला मस्तानशाह फिरोजपुर झिरका (गुड़गांव), तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

स्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांखनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यवाल इसके हारा सरकारी श्रिविस्चना सं० 5415-3-श्रन 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिविस्चना सं० 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिविस्चना की धारा 7 के श्रिवीन गठित श्रन त्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचादतीन मान में देने हें। निर्दिश्य करते हैं जो कि उन्त प्रवत्श्व श्रीम के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

श्या श्री शृर्लशत वृभार की सेवाझो का समापन स्थायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस रा<mark>हत</mark> का हकदार है ?